ISSN (Online) 2581-9429

IJARSCT
Impact Factor: 5.731

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Volume 5, Issue 1, May 2021

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता: एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ0 रजत गंगवार

अिसस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश,

rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सार:-

प्रस्तुत शोध पत्र महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों का गहन विश्लेषण करते हुए यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि उनके विचार आज के आर्थिक संकटों, पर्यावरणीय चुनौतियों और सामाजिक असमानताओं के संदर्भ में कितने प्रासंगिक हैं। गांधी का अर्थशास्त्र केवल एक आर्थिक सिद्धांत नहीं था, अपितु यह एक नैतिक-आध्यात्मिक जीवन-दर्शन था जो मानव की आंतरिक शांति और सामाजिक न्याय को केंद्र में रखता था।

इस अध्ययन में ट्रस्टीशिप सिद्धांत, ग्राम स्वराज, स्वदेशी आंदोलन, सर्वोदय की अवधारणा एवं अहिंसक अर्थव्यवस्था जैसी गांधीवादी अवधारणाओं का विवेचनात्मक परीक्षण किया गया है। साथ ही इनकी तुलना आधुनिक अर्थशास्त्र की विभिन्न धाराओं – जैसे टिकाऊ विकास , सामाजिक उद्यमिता, सहभागिता अर्थव्यवस्था और स्थानीय उत्पादन मॉडल से की गई है।

प्रस्तुत शोधपत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि गांधीवादी अर्थशास्त्र वैश्विक जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और तकनीकी विस्थापन की चुनौतियों का एक वैकल्पिक और सतत समाधान प्रस्तुत करता है। गांधीजी का कहना था कि मानव श्रम की परवाह न करने वाली कोई भी योजना न तो मुल्क में संतुलन कायम रख सकती है और न इनसानों को बराबरी का दर्जा दे सकती है। इसी तरह गाँधीजी ने कहा "मनुष्य का लक्ष्य अपने उपभोग को निरंतर बढ़ाना नहीं अपितु सादगी के जीवन में संतोष प्राप्त करना है। यदि शक्तिशाली व अमीर लोग इस भावना में जिएं जो गरीबी के लिए संसाधन बचने की संभावना कहीं अधिक होगी।"

कुंजी शब्द :-आर्थिक विचार, वर्तमान प्रासंगिकता, अंधाधुंध मशीनीकरण, आजीविका, मानव श्रम, संतुलन, संसाधन, सत्य एवं अहिंसा, भारतीय चिंतन, पाश्चात्य, प्रवास, प्रेरणा स्रोत, ट्रस्टीशिप,

विषमता, विकेंद्रित अर्थव्यवस्था, शोषण, श्रमिक, कल्याण, आत्मनिर्भरता, बेरोजगारी, स्वदेशी, कुटीर एवं लघु, ग्रामीण, स्वरोजगार, सशक्तिकरण ,*गांधीवादी अर्थशास्त्र, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय, टिकाऊ विकास, सामाजिक न्याय*

प्रस्तावना:-

महात्मागांधी और उनके अनुयायियों के आर्थिक विचारों को संयुक्त रूप से गांधीवादी अर्थशास्त्र कहा जाता है। गांधी जी एक महान राजनीतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं कर्मवीर संत थे। वह कोई अर्थशास्त्री नहीं थे फिर भी उनके आर्थिक विचार समाज एवं देश को गरीबी, बेरोजगारी एवं भुखमरी की समस्या से निपटने में अत्यन्त उपयोगी हैं। गांधी जी ही एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने विचार सत्य और अहिंसा का दुश्मनों के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। गांधीजी के आर्थिक विचारों में भी अहिंसा का दर्शन होता है। गांधी जी के विचारों का प्रभाव भारतीय चिंतन और नीतियों पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर में हुआ था। गांधी जी भारतीय एवं पश्चात दोनों विचारों से प्रेरित थे। खासकर गीता एवं रामायण से विशेष रूप से प्रभावित थे तथा कुरान, बाइबल आदि के भी अनुयायी थे। गांधी जी के विचारों पर गोपाल कृष्ण गोखले, थोरो, रोस्किन, टॉलेस्टॉय आदि के प्रभाव को देखा जा सकता है। गांधी जी का आर्थिक विचार उनके स्वयं के प्रयोग से प्रेरित हैं। दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान उन्होंने अनेक तरह से वहां रह रहे भारतीय गिरमिटिया मजदूर एवं छोटे-छोटे भारतीय व्यापारियों की मदद की। भारतीय परिवेश में गांधी जी के आर्थिक विचार एवं विकेंद्रीकृत आर्थिक नीति प्रेरणा स्रोत का कार्य कर रही है। उनके आर्थिक विचार उस समय जितने महत्वपूर्ण थे, उससे कहीं ज्यादा आज प्रसांगिक होते जा रहे हैं।

21वीं सदी में जब विश्व अनेक संकटों से जूझ रहा है – जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आय असमानता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न बेरोजगारी का भय, वैश्विक महामारियाँ, और सामाजिक विखंडन। ऐसी विषम परिस्थितियों में गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता स्वतः उभर कर सामने आती है।

"पृथ्वी के पास सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन सभी की लालसाओं को पूरा करने के लिए नहीं।"

– महात्मा गांधी

यह कथन आज के उपभोक्तावादी युग में और भी सटीक प्रतीत होता है। गांधी ने अपने जीवनकाल में ही औद्योगीकरण की सीमाओं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की शक्ति को पहचान लिया था। उन्होंने 'हिंद स्वराज' (1909) में पश्चिमी सभ्यता और उसके यंत्रवादी अर्थशास्त्र की तीखी आलोचना की थी।

अध्ययन के उद्देश्य :-

1.गांधी के प्रमुख आर्थिक विचारों का व्यवस्थित विश्लेषण करना
2.इन विचारों की आधुनिक आर्थिक चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना
3.व्यावहारिक नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें गांधी के मूल लेखन (हिंद स्वराज, यंग इंडिया, हरिजन), उनके समकालीन और परवर्ती विचारकों के विश्लेषण, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों एवं वैश्विक आर्थिक सूचकांकों का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक एवं विवेचनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए गांधीवादी अवधारणाओं की व्याख्या की गई है।

गांधी का आर्थिक दर्शन: मूल अवधारणाएँ

गांधी का आर्थिक चिंतन किसी एक पुस्तक या सिद्धांत में सीमित नहीं था। यह उनके समग्र जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग था। उनके आर्थिक विचारों का केंद्र बिंदु था – 'अंतिम आदमी' या जिसे वे 'अंत्योदय' कहते थे। उनका मानना था कि किसी भी आर्थिक व्यवस्था की सफलता का मापदंड यह होना चाहिए कि उस व्यवस्था से समाज के सबसे कमजोर और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को क्या लाभ हुआ।

1. गाँधी जी का संरक्षता या प्रन्यास या ट्रस्टीशिप का सिद्धांत:-

ट्रस्टीशिप गांधी के आर्थिक चिंतन की सबसे मौलिक और विशिष्ट अवधारणा है। इस सिद्धांत के अनुसार संपत्ति के स्वामी वास्तव में उसके ट्रस्टी हैं, स्वामी नहीं। अर्थात् धनी व्यक्ति अपनी संपत्ति का उपयोग केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के व्यापक हित में करेगा।

"मैं चाहता हूँ कि धनी लोग अपनी संपत्ति का उपयोग न्यासी के रूप में करें और यह समझें कि वे ईश्वर की ओर से इसके रक्षक नियुक्त किए गए हैं।"

– महात्मा गांधी, 1942

यह सिद्धांत न तो पूँजीवाद की निरंकुशता को स्वीकार करता है और न ही साम्यवाद के बलपूर्वक राष्ट्रीयकरण को। यह एक तीसरा मार्ग है जो नैतिकता और स्वैच्छिक त्याग पर आधारित है। आधुनिक कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी की अवधारणा ट्रस्टीशिप के इसी भाव से प्रेरित है। गाँधी जी समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को मिटाना चाहते थे, व्यक्तिगत सम्पत्ति का अंत चाहते थे एवं आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए उन्होंने संरक्षता का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को उत्ताराधिकार में भारी सम्पत्ति मिलती है अथवा किसी ने व्यापार-उद्योग के लाभ से भारी मात्रा में धन संचय किया है तो वह संपूर्ण सम्पत्ति वास्तव में उस व्यक्ति की न होकर संपूर्ण समाज की है। जिस व्यक्ति ने सम्पत्ति का संचय किया है वह स्वयं को सम्पत्ति का स्वामी न समझकर ट्रस्टी समझे। अपना सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक सम्पत्ति पर व्यक्ति केवल अपना अधिकार समझे और धन का शेष भाग संपूर्ण राष्ट्र का मानते हुए सभी के कल्याण पर खर्च करने को हृदय से तत्पर रहे। इस प्रकार गाँधी जी की धन के समान वितरण की योजना का मुख्य उद्देश्य अहिंसात्मक विधि से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रमुख दोष अन्यायपूर्ण वितरण को समाप्त करना था। इसके लिए ही वर्तमान सरकार द्वारा गरीब वर्ग को कई तरह की सहायता देकर आय व धन का समान वितरण का प्रयास किया जा रहा है।

2. औद्योगीकरण:-

गाँधी जी बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कट्टर विरोधी थे उनका विश्वास था कि बड़े पैमाने के उत्पादन से ही विभिन्न सामाजिक और आर्थिक दोष उत्पन्न हुए हैं। मशीनों का उपयोग मनुष्य को आलसी बना देता है और वह परिश्रम से कतराने लगते हैं। गाँधी जी ने विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का पक्ष लिया अर्थात एक ऐसी अर्थव्यवस्था को उत्तम समझा जिसमें श्रमिक स्वयं अपना स्वामी हो। विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था में श्रमिकों का शोषण नहीं होगा, हिंसा के अवसर नहीं होंगे। गाँधी जी का विश्वास था कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या और गरीब देश के लिए मशीनों का उपयोग लाभप्रद नहीं होगा। भारत देश में अधिक जनसंख्या को काम पर लगाने की दृष्टि से उत्पादन की ऐसी प्रणालियाँ काम में लानी होगी जिसमें अधिकाधिक श्रमिकों की खपत हो। यद्यपि गाँधी जी मशीनों द्वारा संचालित उद्योग के विरोधी थे पर बाद में गाँधी जी का मत था कि बड़े पैमाने के उद्योगों

को कुटीर उद्योगों का प्रतिद्वंदी न बनाकर उनका सहायक बनना चाहिए। इसके अतिरिक्त गाँधी जी बिजली, जहाज निर्माण, लौह उद्योग, मशीन निर्माण आदि जो आवश्यक है उनके विरुद्ध नहीं थे किन्तु वे इन दो बातों को महत्व देते थे। प्रथम - समस्त समाज का अधिकतम कल्याण , द्वितीय- अपनी मौलिक आवश्यकताओं की वृद्धि में हम अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य न भूल जायें। उद्योगों के क्षेत्र में गाँधी जी ग्राम उद्योगों और छोटे उद्योगों को प्राथमिकता देते थे, उनके अनुसार इसमें काम करने में अधिक आत्मसंतोष भी प्राप्त होता है, आत्मनिर्भरता बढ़ती है। व्यय कम होता है, कम पूँजी पर ये छोटे व कुटीर उद्योग कार्य कर सकते हैं। वर्तमान में गाँवों का विकास औद्योगीकरण \से कभी संभव नहीं है। गांवों का विकास ही भारत का विकास है,, जो लघु व कुटीर उद्योग से ही संभव है। इसके अतिरिक्त कृषि में छिपी बेरोजगारी (मौसमी बेरोजगारी, अदृश्य बेरोजगारी) भी लघु, कुटीर उद्योगों के विकास से दूर हो सकती है तथा उत्पादन, व्यय, सुरक्षा,शोषण और प्रदूषण रहित वातावरण इन सभी दृष्टिकोण से लघु उद्योग व्यवहार्य व वांछनीय हैं।

3.ग्राम स्वराज एवं विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था

गांधी की आर्थिक दृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ था – ग्राम स्वराज। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और जब तक गाँव आत्मनिर्भर नहीं होंगे, भारत को वास्तविक स्वाधीनता प्राप्त नहीं होगी। उन्होंने शहरीकरण और केंद्रीकृत उद्योगों के बजाय कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प पर आधारित विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का समर्थन किया। गांधी की ग्राम अर्थव्यवस्था की परिकल्पना सात स्तरों पर आधारित थी: ग्राम, तालुका, जिला, प्रांत, राष्ट्र, महाद्वीप और विश्व – जहाँ हर इकाई अपनी आवश्यकताओं के लिए अधिकतम स्वावलंबी हो।

4.स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरताः

स्वदेशी आंदोलन केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की राजनीतिक रणनीति नहीं था, बल्कि यह एक गहरा आर्थिक दर्शन था। गांधी ने स्वदेशी को जीवन-पद्धति के रूप में देखा। उनके अनुसार स्वदेशी का अर्थ है – अपने निकटतम पड़ोसी की सेवा करना और विश्व-सेवा को उसी के माध्यम से प्राप्त करना।

"स्वदेशी वह भावना है जो हमें अपने पड़ोसियों की सेवा करने के लिए बाध्य करती है और दूर के लोगों की हमारे पड़ोसियों की कीमत पर सेवा करने से रोकती है।"

– महात्मा गांधी, यंग इंडिया

स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता का विचार गांधी जी के मौलिक विचार नहीं है लेकिन गांधी जी ने इन विचारों को चंपारण सत्याग्रह आंदोलन के समय काफी प्रचारित किया था। उनका मानना था कि स्वदेशी उत्पाद को बढ़ावा देने से जहां एक तरफ देश को आर्थिक मजबूती मिलती है वहीं हमारे आसपास के लोगों को रोजगार भी मिलता है। गांधी जी ने आत्मनिर्भर ग्राम स्वराज की कामना भी की थी, आज आत्मनिर्भर भारत को सरकार द्वारा प्राथमिकता दी जा रही है। स्वदेशी की भावना समाज को जोड़ने का कार्य करती है। स्वदेशी का अर्थ हमारे आसपास बनने वाले सामान एवं सेवा से है जिसका निर्माण स्थानीय स्तर पर स्थानीय लोगों द्वारा किया जाता है।

गांधी जी का स्वदेशी का आग्रह आज इतना प्रासंगिक है कि बड़े-बड़े राष्ट्र इस पर कार्य कर रहे हैं। भारत सरकार गांधी के विचारों से काफी प्रभावित हैं, वे घरेलू सामान से लेकर अत्याधुनिक रेल, हवाई जहाज, फाइटर प्लेन, सबमरीन एवं सैटेलाइट तक स्वदेशी तकनीक एवं स्वदेशी वैज्ञानिक द्वारा बनाने का प्रयास कर रही है। व्यक्ति व समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उपयुक्त ऋण योजना पर भी कार्य कर रही है। स्वदेशी एक तरफ देश के लाखों करोड़ रुपए बचाने का काम करता है वहीं दूसरी तरफ देश में लाखों की संख्या में रोजगार पैदा करने का कार्य भी करता है।

5. कुटीर एवं लघु उद्योग:-

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों का सबसे महत्वपूर्ण भाग कुटीर एवं लघु उद्योग है। 1915-16 में गांधी जी ने भारतीय ग्रामीण परिवेश का दौरा किया, उन्होंने देखा कि गांव में सबसे ज्यादा बेकारी की समस्या है, जिसके समाधान के लिए उन्होंने ग्रामीण कुटीर एवं लघु उद्योग का विचार दिया। गांधी जी का विचार था कि कृषि आधारित उद्योग, पशुपालन एवं लघु उद्योग से ग्रामीणों की बेकारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है। जिसमें कपास से कपड़ा बनाना, मिट्टी का बर्तन बनाना, कंपोस्ट खाद तैयार करना, ग्रामीण हाट एवं बाजार से व्यापार बढ़ाना, दूध एवं दुग्ध उत्पादों को बढ़ावा देना, इत्यादि तैयार करना। ईख पेरना, गुड़ बनाना, चरखा चलाना इत्यादि। उपरोक्त कार्य को गांधीजी ग्रामीण विकास की रीढ़ मानते थे, इसके बिना समाज में आर्थिक विकास नहीं किया जा सकता।महात्मा गांधी के कुटीर एवं लघु उद्योग की प्रासंगिकता इतनी है कि

वे 21वीं सदी के समाज के विकास एवं बेरोजगारी की समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए प्रदेश एवं राष्ट्र स्तर पर कार्य किया जा रहा है। आज के समय में यह मुद्दे इतनी प्रासंगिक है कि इस पर संसद से सड़क तक आंदोलन किए जाते है। इस मुद्दे पर प्रदेश एवं राष्ट्रीयाध्यक्षों का चुनाव निर्भर करता है। ये चुनाव परिणाम को निर्देशित करता है। कुटीर एवं लघु उद्योग सुनने एवं करने में चाहे छोटा लगे लेकिन इसका प्रभाव उतना ही बड़ा होता है। इसमें एक साथ करोड़ों लोगों को रोजगार देने की क्षमता होती है जो किसी भी बड़े उद्योग में नहीं है। वर्तमान बिहार सरकार जीविका के माध्यम से घरेलू एवं लघु उद्योग को विस्तार देने का प्रयास कर रहा है। जीविका के माध्यम से सभी बेरोजगार महिला एवं पुरुष को स्वरोजगार करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। सरकार की मंशा है कि स्वरोजगार जहां एक तरफ समाज को आर्थिक रूप से सशक्त करने का कार्य करेगा वहीं पलायन एवं बेरोजगारी जैसे गंभीर समस्याओं के निराकरण में भी सहायक सिद्ध होगा।

भारतीय संदर्भ: गांधी और आर्थिक विचार

अमूल – ट्रस्टीशिप का सफल उदाहरण

अमूल (Anand Milk Union Limited) सहकारी समिति गांधीवादी ट्रस्टीशिप और सहभागिता अर्थव्यवस्था का सबसे सफल भारतीय उदाहरण है। डॉ. वर्गीज कुरियन द्वारा 1946 में स्थापित यह सहकारी संस्था आज 36 लाख से अधिक किसान सदस्यों को आर्थिक स्वावलंबन प्रदान करती है। वित्त वर्ष 2022-23 में अमूल का कुल कारोबार 72,000 करोड़ रुपये से अधिक रहा।

SEWA – महिला श्रमिकों का स्वावलंबन

Self-Employed Women's Association (SEWA) 1972 में इला भट्ट द्वारा गुजरात में स्थापित की गई। यह संस्था गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित महिला सशक्तिकरण का एक अनूठा मॉडल है। SEWA आज 20 लाख से अधिक असंगठित क्षेत्र की महिला कामगारों को संगठित करके उन्हें आर्थिक न्याय दिला रही है।

खादी और ग्रामोद्योग – परंपरा का आधुनिकीकरण

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) का वार्षिक कारोबार 2022-23 में 1.34 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है और यह लगभग 1.1 करोड़ ग्रामीण कारीगरों को रोजगार देता है। यह आँकड़ा गांधीवादी कुटीर उद्योग की वर्तमान प्रासंगिकता और व्यावसायिक सफलता दोनों का प्रमाण है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
IJARSCT
Impact Factor: 5.731
Volume 5, Issue 1, May 2021

गांधीवादी अर्थशास्त्र की वर्तमान चुनौतियाँ

यद्यपि गांधीवादी अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता निर्विवाद है, तथापि इसके व्यापक अनुप्रयोग में कई व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं: वैश्वीकरण और मीडिया ने उपभोक्तावाद को इतना गहरा बना दिया है कि न्यूनतम आवश्यकता का गांधीवादी आदर्श सामान्य जनजीवन से दूर होता जा रहा है AI और स्वचालन की गति इतनी तीव्र है कि कुटीर उद्योग-आधारित अर्थव्यवस्था इससे प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती ट्रस्टीशिप जैसे नैतिक सिद्धांत तभी कार्य करते हैं जब राजनीतिक और कॉर्पोरेट इच्छाशक्ति हो WTO और मुक्त व्यापार समझौते स्वदेशी की अवधारणा को व्यावहारिक रूप से सीमित करते हैं तेज शहरीकरण की दर गांधी के ग्राम-केंद्रित विकास मॉडल के विपरीत जा रही है

निष्कर्षः

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी कोई अर्थशास्त्री नहीं थे ना ही उनके आर्थिक विचार वैज्ञानिक है, उनके आर्थिक विचार उनके अनुभव एवं व्यवहारिक ज्ञान की अभिव्यक्ति है फिर भी उनके आर्थिक विचारों ने भारतीय ग्रामीण समाज के व्यक्तियों को आर्थिक रूप से सशक्त करने का कार्य किया है। उनके आर्थिक विचार जिसमें लाखों, करोड़ों लोगों को रोजगार देने की क्षमता है वह है 'ग्रामीण व लघु उद्योग'। गांधी जी बड़े कल-कारखाने के विरोधी थे। उनका तर्क था कि जहां पर आदमी बेरोजगारी से परेशान है, काम नहीं मिलने के कारण गरीबी व भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो रही है, वहां व्यक्ति के स्थान पर मशीन से काम करना मानवता के प्रति क्रूरता व हिंसा है। इसलिए वे बड़े कल-कारखाने के विरोधी थे लेकिन जो यंत्र (मशीन) ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार दे सके, रोजी-रोटी उपलब्ध करा सके वैसे यंत्र (मशीन) को अपनाना चाहिए। गांधी जी चरखा चलाने की बात करते थे, उनका मानना था कृषि कार्य के बाद किसानों के पास साल में चार मास तक कोई काम नहीं रहता इस समय चरखा चलाकर अपनी रोजी-रोटी कमाई जा सकती है। गांधी जी ने व्यक्ति व समाज को आर्थिक विकास के लिए कुटीर एवं लघु उद्योग, सहकारी कृषि एवं पशुपालन, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, कौशल युक्त शिक्षा, सर्वोदय एवं ट्रस्टीशिप की भावना आदि विचार दिए जो उस समय काफी प्रासंगिक थे और आज भी प्रासंगिक हैं। आज के वर्तमान समय में चाहे टेक्नोलॉजी कितनी भी आगे क्यों ना हो लेकिन जब तक रोजगार सभी के हाथ नहीं होंगे तब तक बेकारी की समस्या खत्म नहीं हो सकती। गांधी जी के 'मानव केंद्रित अर्थ व्यवस्था' वाले विचार इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि उसमें हर व्यक्ति को रोजगार देने की बात कही गई है । जब हर व्यक्ति रोजगार से जुड़ जाएगा तो आर्थिक असमानता की खाई समाज में कम होगी। किसी भी बड़े

कारखाने से ज्यादा आर्थिक शक्ति कुटीर व लघु उद्योग में है क्योंकि यह ज्यादा से ज्यादा व्यक्तियों को रोजगार दे सकता है। साथ ही स्थानीय कच्चे माल के उपयोग से किसानों एवं प्रदेश को काफी लाभ होता है। इसका दूसरा बड़ा फायदा यह है कि उपयोगकर्ता को स्थानीय सामग्री मिलने से कम खर्च में जरूरी सामान उपलब्ध हो जाता है।

सहकारी कृषि और पशुपालन के विचारों को समाज में बहुत ही कम देखा जाता है। इस विचार पर आज भी काफी अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि गाँधी जी के सहकारी कृषि और पशुपालन से भी समाज को लाभ पहुंचाया जा सके। स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। स्वदेशी वस्तु या सेवा आप जितना उपयोग करेंगे, आपके समाज और देश में आत्मनिर्भरता की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी।, गांधी जी के इस विचार को विकसित भारत की संकल्पना का मूल आधार माना जा सकता है। हाल ही में गाँधी जी के कौशल युक्त शिक्षा एवं हस्तकौशल के विचार को 'न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020' की मूल परिकल्पना में शामिल किया गया है। गांधी जी का मानना था कि जब तक अंतिम व्यक्ति तक विकास नहीं पहुंचेगा तब तक सर्वोदय को साकार नहीं किया जा सकता है। सर्वोदय को साकार करने के लिए समाज के जमींदार धनवान और पूंजीपति को त्याग की आवश्यकता है। वह अपने धन का दान या ट्रस्टीशिप के द्वारा समाज के उन वर्गों को लाभ पहुंचाएं जो जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। गांधी जी के आर्थिक विचार उनके रामराज्य की परिकल्पना को भी स्थापित करने की दिशा एवं दशा सुनिश्चित करते हैं। उनके रामराज्य की परिकल्पना न केवल भारत बल्कि विश्व को शांति और आर्थिक प्रगति के पथ पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस शोध पत्र के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि महात्मा गांधी के आर्थिक विचार चाहे वे ट्रस्टीशिप हों, ग्राम स्वराज हों, स्वदेशी हों या सर्वोदय ,आज के वैश्विक संकटों के संदर्भ में न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि अनिवार्य भी हैं। वर्तमान अर्थव्यवस्था GDP वृद्धि को ही सफलता का मापदंड मानती है, परंतु यह मापदंड मानवीय सुख, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता को नहीं आँकता। गांधीवादी अर्थशास्त्र इस एकांगी दृष्टि को चुनौती देता है और एक समग्र, मानवकेंद्रित, प्रकृति-सम्मत विकास मॉडल प्रस्तुत करता है। "21वीं सदी के भारत और विश्व को एक ऐसे आर्थिक मॉडल की आवश्यकता है जो विकास और मानवता, प्रगति और परंपरा, आधुनिकता और नैतिकता के बीच सेतु बना सके। गांधीवादी अर्थशास्त्र इस सेतु का निर्माण कर सकता है , बशर्ते हम उसे केवल संग्रहालयों में नहीं, बल्कि जीवन में उतारें।

संदर्भ:-

1. गांधी, एम. के. : *हिन्द स्वराज.* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद,1909

2.गांधी, एम. के. : कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम इट्स मीनिंग एंड प्लेस. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद,1945

3.गांधी, एम. के.: विलेज स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1962

4.गांधी, एम. के. :ट्रस्टीशिप, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1997

5.कुमारप्पा, जे. सी. : इकॉनमी ऑफ़ परमानेंस, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 1945

6.मजुमदार, बी. (1996). : गांधियन इकोनामिक थॉट, नई दिल्ली, 1996

7.सिंह, सुधीर प्रताप :गांधी जी और ग्राम स्वरोजगार, किताब वाले, नई दिल्ली , 2022

8.तिवारी, राकेश: नई शिक्षा नीति 2020 और गांधी दर्शन, राजकमल प्रकाशन, 2020

9.जैकब, पी. जॉय. (2014). ,गांधियन इकोनॉमिक्स: ए ह्यूमन अप्रोच, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस,2014

10.दीवान, आर. और लुत्ज़, एम. : एसेज इन गांधियन इकोनॉमिक्स, गांधी शांति प्रतिष्ठान, 1985

11.मेहता, वी. एल. :डिसेंट्रलाइज्ड इकोनामिक डेवलपमेंट, खादी और ग्रामोद्योग आयोग,1970

12.सिंह, राम बिनोद.: "गांधियन विज़न ऑफ़ रूरल डेवलपमेंट", *योजना,* सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, 2011

13.सिंह, भवानी प्रसाद : गांधीवादी अर्थशास्त्र: एक समालोचनात्मक विवेचन. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर,2020a

14.दासगुप्ता, अजीत. : गांधीज इकोनामिक थॉट, रूटलेज, लंदन, 1966

15.आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका, जून 2019,

16.महात्मा गांधी, सत्य के मेरे प्रयोग आत्मकथा, पहला भाग,

17.गांधी जी, मेरे सपनों का भारत, प्रथम अध्याय

18.आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका, जून 2019,

19.यंग इंडिया, 5 जून 1925

20.हरिजन, 28-8-1937